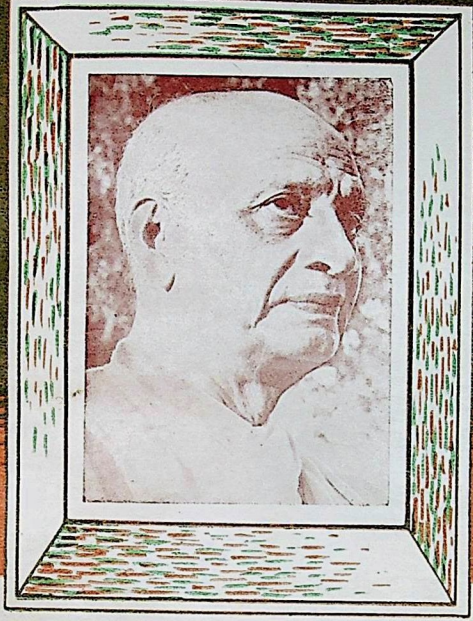

सरदार पटेल

16 H
923.2
P295V

— सत्यकाम विद्यालङ्कार

CONSULATE GENERAL OF INDIA
SAN FRANCISCO, CAL.

सरदार पटेल

लेखक
श्री सत्यकाम विद्यालंकार

राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली ६.

१९५२]

[मूल्य आठ आना

CONSULATE GENERAL OF INDIA
SAN FRANCISCO, CAL.

सरदार पटेल

लेखक
श्री सत्यकाम विद्यालंकार

राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली ६.

१९५२] [मूल्य आठ आना

प्रकाशक :
राजपाल एण्ड सन्ज़,
काश्मीरी गेट,
देहली।

H
923.2
P295V

मुद्रक :
बालकृष्ण एम० ए०
युगान्तर प्रेस,
डफ़रिन पुल, दिल्ली।

जन्म से विद्रोही

वल्लभभाई का जन्म ३१ अक्तूबर १८८५ ई० को गुजरात प्रांत के करमसद गांव में हुआ था। उनके पिता झवेरभाई पटेल की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। खेती ही से गुज़र होती थी। वह भी दूसरे के खेतों पर। कुछ अपनी ज़मीन भी थी। आर्थिक स्थिति साधारण होते हुए भी झवेरभाई बहादुर थे और पक्के देशभक्त थे।

सन् १८५७ के विप्लव में आप झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई की फौज में भर्ती होकर अंग्रेजों और उनके हिंदुस्तानी हिमायतियों से लड़े थे। इन्दौर के महाराजा ने आपको गिरफ्तार भी किया था, किंतु अपनी चतुराई से आपका छुटकारा हो गया था।

यह बात प्रसिद्ध है कि एक दिन इन्दौर के महाराजा

अपने महल के उस कमरे के क़रीब ही शतरञ्ज खेल रहे थे, जिसमें आप नज़रबंद थे। आप सींखचों के भीतर से महाराज की चालें देख रहे थे। शतरंज का आपको बहुत शौक़ था। आपने देखा कि महाराज जिस चाल से चल रहे थे वह उन्हें अवश्य मात दे देगी। इसलिये आपने महाराज को वह चाल चलने से रोका और दूसरी चाल बतलाई। महाराज ने झवेरभाई की बात मान ली और खेल में जीत गये। इस घटना से आपकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। जेल से छुटकारा मिल गया। जेल से छूटकर आप अपने गांव की ज़मीन पर आगये और फिर खेती करने लगे।

झवेरभाई के दो पुत्र हुए। बड़े भाई का नाम विट्ठलभाई और छोटे भाई का वल्लभ। विट्ठलभाई भी वल्लभभाई की तरह योग्य और बहादुर थे। असेम्बली में प्रधान की हैसियत से आपने जिस प्रतिभा का परिचय दिया था, वह आश्चर्यपूर्ण था। दोनों भाइयों को निर्भयता और युद्ध-प्रियता के गुण पिता से उत्तराधिकार में मिले थे।

वल्लभभाई का बचपन माँ-बाप की देख-रेख में गांव में ही बीता और वहीं पर उनको प्रारंभिक शिक्षा

दी गई। बाद में नदियाद गये और वहां की शिक्षा समाप्त कर बड़ौदा पहुँचे। बड़ौदा स्कूल में उनकी एक शिक्षक से कुछ कहा-सुनी हो गई, जिसके फलस्वरूप वल्लभभाई स्कूल से निकाल दिये गए। बाद में पुनः नदियाद जाकर वहीं से इन्होंने मैट्रिक पास किया।

—❀—

नटखट वल्लभ

वल्लभभाई के बचपन की दो-एक बातें बड़ी मनोरंजक हैं।

विद्यार्थी-जीवन में भी वल्लभभाई विद्यार्थियों के नेता थे। नदियाद के जिस स्कूल में वल्लभभाई पढ़ते थे वहीं के एक शिक्षक पुस्तकों का व्यापार भी करते थे और लड़कों को मजबूर करते थे कि वे पुस्तकें उन्हीं की दुकान से लें। वल्लभभाई को यह बात अच्छी न लगी। उन्होंने विद्यार्थियों को उकसाया कि कोई भी लड़का उनके यहां से पुस्तकें मोल न ले। लड़के बड़े उत्तेजित हुए और उन्होंने हड़ताल कर दी। एक सप्ताह स्कूल बंद रहा।

आखिर मास्टर साहब को झुकना पड़ा और हड़ताल खत्म हुई।

इसी तरह वल्लभभाई जब दसवें दर्जे में पढ़ते थे, तब की एक घटना है। पहले उन्होंने संस्कृत ले रक्खी थी, बाद में उसमें कठिनाई पड़ने पर उन्होंने गुजराती ले ली। गुजराती के शिक्षक स्वयं संस्कृत के प्रेमी थे और जो लड़के संस्कृत नहीं पढ़ते थे, वे सदा उनसे अप्रसन्न रहते थे। वल्लभभाई जब पहली बार उनकी कक्षा में पहुँचे तो मास्टर साहब ने उनसे व्यंगपूर्वक कहा—

"पधारिये महापुरुष !"

उन्हें क्या पता था कि उनकी वाणी एक दिन सत्य होकर रहेगी।

मास्टर साहब ने फिर कहा—"संस्कृत छोड़ कर गुजराती लेना तुम जैसे होनहार लड़के को शोभा नहीं देता।"

"पर मास्टर साहब ! यदि हम सब ने संस्कृत ही ले ली होती तो आप क्या करते ?" वल्लभभाई ने उत्तर दिया।

"शैतान कहीं का !" बेञ्च पर खड़े होने का हुक्म हुआ।

अब गुरु शिष्य में खुली टक्कर होने लगी। मास्टर साहब रोज़ वल्लभभाई को घर के कामों में पहाड़ा लिख लाने को देते। दसवें दर्जे के किसी भी स्वाभिमानी विद्यार्थी के लिये यह अपमानजनक था। वल्लभभाई ने भी अपमान का बदला लेने की ठान ली।

पहाड़े को गुजराती में 'पाडे' कहते हैं और भैंस के बच्चे को भी 'पाडे' कहते हैं। एक दिन वल्लभभाई से मास्टर ने पूछा—"अरे तुम पाडे लाये ?"

वल्लभभाई ने अपने स्वाभाविक विनोद के साथ उत्तर दिया—"मास्टर साहब ! पाडे लाया तो था, पर स्कूल के दरवाजे पर उनमें से दो भड़क पड़े और उनके भड़कते ही सारे के सारे भाग गये।"

मास्टर साहब गुस्से से लाल हो गये। इसकी रिपोर्ट उन्होंने हैडमास्टर के पास भेजी। हैडमास्टर ने वल्लभभाई को अपने पास बुलाया और पूरा हाल पूछा। बाद में

बिना कोई दण्ड दिये उन्हें यह कह कर छोड़ दिया—"ऐसा लड़का मैंने अभी तक नहीं देखा।"

—❀—

निर्भय और साहसी

वल्लभभाई में डर का नाम-निशान नहीं था। बचपन से ही वे निडर थे। जब छोटे थे तो एक बार बीमार हुए। कांख में एक फोड़ा निकला। गांव वालों ने दवा बताई और कहा—'लोहा गर्म करके फोड़े में भोंक दो।' वल्लभभाई तैयार हो गए। लोहे की सलाख गर्म थी। भोंकने वाला एक ओर वल्लभ जैसे कोमल लड़के को और दूसरी ओर लोहे की गरम सलाख को देखकर हिचकिचाया। वल्लभभाई झुंझला उठे—'जल्दी भोंको। क्या देख रहे हो? लोहा ठंडा हो जायगा। यदि तुम से नहीं होता तो लाओ, मैं अपने ही हाथों भोंक लूँ'—कह कर उन्होंने गरम सालख से घाव को दाग़ दिया और उफ़ तक न की।

ख़तरों से खेलना आपको सदा प्रिय रहा। एक बार आप ने कहा था, "मेरे साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर

सकता, मैं किसी ऐसे काम में नहीं पड़ता जिसमें खतरा न हो। जो लोग आपत्तियों को निमन्त्रण दें उनकी सहायता के लिए मैं सदा तैयार हूँ।"

"वल्लभभाई बरफ़ से ढके ज्वालामुखी के समान हैं—" स्वर्गीय मौलाना शौकत अली ने भी एक बार कहा था। बरफ़ से ढके हों या नहीं, किन्तु ज्वालामुखी आप अवश्य थे। उनके हृदय में सदा एक आग जला करती थी, ऐसी आग जो एक ही बार में सहस्रों को भस्म करने की क्षमता रखती हो। उसी आग से उनका खून हमेशा उबला करता था, भुजाएँ फड़कती रहती थीं, और वाणी सदा आग उगलने के लिए तैयार बैठी रहती थी।

—❀—

कालेज की शिक्षा

कालेज की शिक्षा का खर्च उठाने की हैसियत इनके माता-पिता की नहीं थी। वल्लभभाई को भी कालेज की शिक्षा की ओर विशेष रुचि नहीं थी। वह विलायत जा कर बैरिस्टर बनने का स्वप्न देख रहे थे। पर धन तो

पास था नहीं। अन्त में वल्लभभाई ने एक तरकीब सोची। उन्होंने मुख़्तारी की परीक्षा पास की और गोधरा में मुख़्तार हो गए। वहां इनकी प्रैक्टिस खूब चली।

दिन रात एक करके इन्होंने कुछ पूँजी एकत्र कर ली और एक कम्पनी से विलायत जाने के लिए बातचीत करने लगे। इसी बीच कम्पनी का एक पत्र कहीं से इनके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल के हाथ लग गया। बड़े भाई ने कहा—"पहले मुझे जा लेने दो, मेरे लौटने पर तुम हो आना।" वल्लभभाई मान गए। फलतः उनके पन्द्रह दिन बाद ही विट्ठलभाई बैरिस्टरी पढ़ने विलायत चले गये। तीन वर्ष बाद जब वे लौटे तब वल्लभभाई गए और वहां से प्रथम श्रेणी में बैरिस्टरी पास करके लौट आये। उधर वकालत करने के साथ ही विट्ठलभाई राजनीति में भी काफ़ी भाग लेने लग गये थे, अतः उन्होंने वल्लभभाई से कहा कि, "तुम कुटुम्ब का पालन-पोषण करो, मैं देश सेवा में सक्रिय भाग लूंगा।" ऐसा ही हुआ। वल्लभभाई ने यह राय सहर्ष स्वीकार कर ली।

—❀—

राजनीति में प्रवेश

पर ज्यों ज्यों गुजरात की राजनीति में गांधी जी का प्रवेश होने लगा, वल्लभभाई की विचारधारा भी बदलने लगी। इसी बीच गोधरा में गांधी जी की अध्यक्षता में प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन हुआ, जिसमें रचनात्मक कार्यों की उपसमिति के मन्त्री वल्लभभाई बनाए गए। इन्होंने बड़े उत्साह के साथ काम किया और शीघ्र ही अपने कामों के लिए गुजरात भर में प्रसिद्ध हो गये।

सब से पहला काम आपने गुजरात में बेगार बन्द करवाने का किया। पहले कमिश्नर को पत्र लिखा गया। कमिश्नर का उत्तर न आने पर यह चेतावनी दी गई कि सात दिन के अन्दर बेगार बन्द न हुई तो जनता को सत्याग्रह के लिये कहा जायगा। इस पर कमिश्नर ने वल्लभभाई को सलाह-मश्वरे के लिये बुलाया। बेगार प्रथा बन्द की गई। सार्वजनिक जीवन में वल्लभभाई की यह पहली विजय थी।

गांधी जी से आपका परिचय बढ़ता गया।

पहले-पहल आपका गांधी जी की रीति-नीति के प्रति विशेष आकर्षण नहीं हुआ। अहिंसा और सत्याग्रह दोनों कमज़ोर आदमियों के हथियार प्रतीत हुए। किन्तु जब अहमदाबाद के मज़दूरों को गांधी जी ने विजय दिलवाई और गांधी जी के आत्मबल का आपको परिचय मिला तब आप गांधी जी के मित्र बन गये। आपका झुकाव भी राजनीति की ओर होने लगा।

उस वर्ष खेड़ा ज़िले की फ़सल खराब हो गई थी। किसानों के पास लगान अदा करने योग्य भी पैसा नहीं था। किसानों ने सरकार से फ़रियाद की। सरकार ने उस पर ध्यान नहीं दिया। लगान की एक २ पाई वसूल करने की धमकी दी। किसान गांधी जी की शरण में आये। गांधी जी ने जांच पड़ताल के बाद खेड़ा के किसानों के पक्ष में सरकार से लड़ने का निश्चय किया। अहमदाबाद के मित्रों में गांधी जी ने इस बात की चर्चा की और पूछा कि "आप में से कौन मेरे साथ खेड़ा चलेगा और मेरा सहायक होगा?" वल्लभभाई ने तुरन्त अपना नाम लिखा दिया। खेड़ा के किसानों को सत्याग्रह के लिये

तैयार करने के लिये वल्लभभाई ने स्वयं गांवों का परिभ्रमण किया। किसी को स्वप्न में भी ध्यान न था कि अहमदाबाद का सर्वश्रेष्ठ बैरिस्टर गांव के कंटीले रास्तों पर पैदल घूम घूम कर किसानों से बातें करेगा। वल्लभ भाई का यह स्वभाव बचपन से था कि या तो वह काम को हाथ में लेते नहीं थे, यदि लेते थे तो पूरी तरह निभाते थे। उनके दिन-रात भ्रमण का ही यह परिणाम था कि खेड़ा के किसान कमर कस कर लगानबन्दी के सत्याग्रह के लिये तैयार हो गये। किसानों की दृढ़ता देखकर सरकार को झुकना पड़ा। लगान माफ़ कर दिया गया। गांधी जी के सत्याग्रह का चमत्कार देखकर वल्लभभाई गांधी जी के शिष्य बन गये। इस घटना के बाद गांधी जी ने वल्लभभाई में अपना ऐसा विश्वासी मित्र पाया जिसने जीवन भर उनका साथ दिया।

—*—

बैरिस्टरी का त्याग

पहले महायुद्ध के बाद रॉलट-ऐक्ट का विरोध करने के लिये गांधी जी ने देशव्यापी हड़ताल की घोषणा की थी। ६ मार्च १९१९ को देश ने नये युग में प्रवेश किया। अहमदाबाद में वल्लभभाई ने हड़ताल को इतना सफल बनाया कि सरकार डर गई। जुलूस का गोलियों से सत्कार किया गया। १९२० में काँग्रेस ने असहयोग का प्रस्ताव पास किया। वल्लभभाई ने बैरिस्टरी का ही परित्याग नहीं किया, वरन् अपने लड़कों को भी विलायत जाने से रोक दिया। इससे पूर्व आप उन्हें ऊँची शिक्षा के लिये विलायत भेजने की पूरी तैयारी कर चुके थे।

गांधीजी के गिरफ्तार होने के बाद गुजरात के नेतृत्व का भार आप के ही कन्धों पर पड़ा। आपने इस काम को बड़ी सफलता से निभाया। असहयोग के कारण स्कूलों व कालिजों से बाहर आए विद्यार्थियों के लिए आपने 'गुजरात-विद्यापीठ' की स्थापना की। विद्यापीठ के लिये धन-संग्रह का काम भी किया। सार्वजनिक कार्यों

के लिये धन एकत्र करने का आपका यह पहला अनुभव था। इस कार्य के लिये आप को बर्मा भी जाना पड़ा। गुजरात विद्यापीठ ने राष्ट्रीय-निर्माण में देश की महत्त्वपूर्ण सेवाएं की हैं।

बोरसद सत्याग्रह—सन् १९२२ में आपको सरकार से एकऔर टक्कर लेनी पड़ी। बोरसद गुजरात का एक तालुक़ा है। तालुक़ा के किसानों पर सरकार ने इतना लगान बढ़ा दिया था कि जनता में त्राहि-त्राहि मच गई। बात यह थी कि उन दिनों बोरसद में देवर बाबा नाम के एक डाकू ने किसानों व ज़मींदारों में आतङ्क फैलाया हुआ था। उस डाकू से मुक़ाबला करने के लिये सरकार ने पुलिस के सिपाही तैनात किये थे। वे सिपाही अपने काम में कामयाब नहीं हुए। तब सरकार ने एक और मुस्लिम डाकू को अपने पक्ष में लेकर देवर बाबा को गिरफ्तार करने की तजवीज़ की। बोरसद में एक की जगह दो डाकू होगये। मुस्लिम डाकू ने भी जनता को लूटना शुरू कर दिया। इन डाकुओं के साथ पुलिस वाले भी शामिल हो जाते थे।

लोग इतना डर गये कि शाम होते ही घरों के दरवाज़े बन्द कर लेते थे। कोई दिन ऐसा नहीं जाता थी कि गांवों में डाका न पड़े या खून-खराबी न होती हो। गांवों में हाहाकार मचने लगा। सरकार पर लोगों का विश्वास नहीं रहा। तब लोग वल्लभभाई के पास पहुंचे। उन्हें अपनी मुसीबतों की कहानी सुनाई। वल्लभभाई स्वयं बोरसद गये, जांच पड़ताल की।

इस बीच सरकार ने सिपाहियों पर आये खर्च को वसूल करने के लिये किसानों पर नया कर लगा दिया। वल्लभभाई ने किसानों को इस नये कर को अदा करने से रोका और डाकुओं से मुक़ाबला करने के लिये गांव वालों को स्वयं-सेवक दल बनाने का आदेश दिया। पुलिस की ज़रूरत ही नहीं रही। २०० स्वयं-सेवक गांव वालों की रक्षा के लिये तैयार हो गये। स्वयं-सेवकों की पहरेदारी शुरू होते ही डाके बन्द हो गये। बम्बई सरकार ने किसानों को बहुत डराया, धमकाया। नया कर लेने की कोशिशें कीं, किन्तु वल्लभभाई के सामने उसकी एक न चली। आख़िर सरकार को अपना

हुक्म वापस लेना पड़ा। वल्लभभाई की विजय हुई। बोरसद की इस विजय ने वल्लभभाई का नाम देश भर में प्रसिद्ध कर दिया।

—❀—

नागपुर झण्डा सत्याग्रह

इसके बाद आप ने नागपुर झण्डा सत्याग्रह का नेतृत्व किया। नागपुर की पुलिस ने लोगों को नागपुर के एक हिस्से में से राष्ट्रीय झण्डा लेकर निकलने की मुमानियत की थी। नागपुर कांग्रेस के स्वयं-सेवकों ने इस सरकारी आज्ञा के विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय किया। सेठ जमनालाल बजाज इस सत्याग्रह के अगुआ थे। उनका गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस ने वल्लभभाई से इस युद्ध का दायित्व संभालने का अनुरोध किया। वल्लभभाई ने नागपुर पहुँच कर सत्याग्रह की बागडोर अपने हाथों में ली। यहाँ भी आपको विजय हुई। पुलिस को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा।

उसके बाद आपने गुजरात के बाढ़-पीड़ितों की

अन्यायपूर्ण है। किसानों ने यह लगान अदा न करने का प्रण किया। वल्लभभाई ने उन्हें चेतावनी दी कि "लगान अदा न करने का अर्थ सरकार से युद्ध करना है। युद्ध में उन्हें असीम कष्ट उठाने पड़ेंगे। ज़मीन जायदाद का मोह छोड़ना पड़ेगा। सरकार तुम्हें मिट्टी में मिला देने की कोशिश करेगी। तुम्हारी स्त्रियां दाने-दाने को तरसेंगी। तुम्हारे बच्चे एक-एक बूंद दूध के बिना भूखे मर जायेंगे। धन-माल की ज़ब्ती की जायगी। यह सब देखना होगा। इतनी मुसीबतें झेलने का साहस हो तो युद्ध का प्रारम्भ करो अन्यथा चुप हो कर सरकार के आगे झुक जाओ।" किसानों ने आपको विश्वास दिलाया कि वे अन्याय के आगे झुकने की अपेक्षा मौत को पसन्द करेंगे। किसानों का दृढ़ निश्चय देख कर वल्लभभाई ने इनके नेतृत्व का भार उठाया। लड़ाई में आगे क़दम रखकर आप पीछे हटना जानते ही नहीं थे, इसीलिये आपने क़दम रखने से पहले ही जनता को चेतावनी दे दी थी।

पहले आपने गवर्नर को सरकारी निश्चय पर

पुनर्विचार करने की दरख़्वास्त भेजी। सरकार ने इस प्रार्थना को ठुकरा दिया और लगान वसूल करने की निश्चित तारीख का ऐलान कर दिया। इस ऐलान के बाद वल्लभभाई ने भी किसानों से कह दिया कि वे लगान की एक पाई भी सरकार को न दें। दोनों ओर से युद्ध शुरू हो गया।

इस युद्ध में सफल होने के कारण ही आपको 'सरदार' की उपाधि मिली थी। तभी से आपके नाम के आगे 'सरदार' लिखा जाने लगा।

बारदौली सत्याग्रह की व्यवस्था में सरदार ने अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया। आपने पूरे ताल्लुके को भागों में बाँट कर उनमें सत्याग्रह छावनियाँ बनादीं। इन छावनियों में सत्याग्रही रहते थे और एक मुखिया रहता था। छावनियों में परस्पर सम्पर्क रखने के लिए आप ने सन्देश-वाहकों की भी व्यवस्था की थी। कुछ जासूस भी रखे थे जो सरकार के अधिकारियों की चालों का विवरण सरदार को देते रहते थे।

सरकार ने भी इस सत्याग्रह को कुचलने में पूरी शक्ति लगा दी। बम्बई के गवर्नर ने ऐलान कर दिया कि "बारदौली" के सत्याग्रह को कुचलने में ब्रिटिश साम्राज्य की पूरी शक्ति लगा दी जायगी। सरकार ने गुण्डों की फौज तैयार की जो गाँव-गाँव में जाकर किसानों को मारती-पीटती थी और घरों में घुस कर लूट-मार करती थी। औरतों पर बलात्कार किया जाता था।

लेकिन इन अत्याचारों से किसानों के निश्चय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। लगान की फूटी कौड़ी भी सरकारी खज़ाने में जमा नहीं हुई। तब सरकार ने ज़मीन-ज़ायदाद कुर्क करनी शुरू की। लेकिन सरकार को कुर्की का माल लेने वाला कोई ख़रीदार ही नहीं मिलता था।

सरदार ने बिल्कुल सैनिक व्यवस्था की हुई थी। हर गाँव में स्वयंसेवक तैनात थे। कुर्की करने वाले सरकारी अफ़सर को देखते ही वे बिगुल बजा देते थे। बिगुल सुनकर गाँव के किसान खेतों में या जङ्गलों में चले जाते

थे। गाँव सुनसान हो जाता था। पुलिस को यह जानना भी कठिन हो जाता था कि किसका कौन सा घर है।

बारदौली सत्याग्रह बाद में इतना महत्त्व का होगया कि इसे देशव्यापी आन्दोलन का रूप मिल गया। बम्बई असेम्बली के कुछ सदस्यों ने बारदौली के अत्याचारों पर रोष प्रकट करने के लिये असेम्बली की सदस्यता से त्याग-पत्र भी दे दिये। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा। जनता की जीत हुई। वल्लभभाई विजयी सेनापति बने। उनको राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के नेताओं में गिना जाने लगा।

—❀—

जेल यात्रा

बारदौली की विजय ने एक बार और गांधी जी को विश्वास दिला दिया कि सत्याग्रह का अस्त्र अमोघ है। इसका प्रयोग यदि सरदार जैसे सेनानी के हाथ से हो तो वह अवश्य सफल हो सकता है।

दूसरे दिन के ८ बजे तक रात भर भूख-प्यास की परवाह किये बिना वहीं बैठे रहे। उस दिन सरकारी सिपाहियों ने बड़ी निर्दयता से लाठी प्रहार किया। सैंकड़ों के सिर फूटे, सैंकड़ों बेहोश हुए। सरदार वल्लभभाई गिरफ्तार कर के जेल भेज दिये गये। मुकद्दमा चला, तीन महीने की सज़ा सुनाई गई।

इस बीच गांधी-इरविन समझौता हो गया। समझौते के फल-स्वरूप सभी राजबन्दी रिहा किये गए। आप भी जेल से छूटे।

—❀—

राष्ट्रपति वल्लभभाई

सरदार वल्लभभाई की राष्ट्रीय सेवाओं से मुग्ध होकर देश ने उन्हें कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन का अध्यक्ष चुना। उस समय यह सन्मान देकर ही ग़रीब देशवासी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते थे। इससे बड़ा पुरस्कार उनके पास नहीं था।

कराची कांग्रेस का अधिवेशन घटनापूर्ण अधिवेशन

था। अधिवेशन से कुछ दिन पूर्व ही सरकार ने भगतसिंह को फांसी दी थी और कुछ दिन पूर्व गांधी-इरविन समझौता भी हुआ था। सरदार वल्लभभाई ने सभापति के जुलूस का समारोह शहीद भगतसिंह की याद में स्थगित कर दिया। अध्यक्ष-पद से आपने जो भाषण दिया वह भी अनोखा था—बहुत छोटा और सारगर्भित।

कराची कांग्रेस के बाद शीघ्र ही फिर सत्याग्रह की घोषणा हो गई। गांधी जी विलायत से खाली हाथ आये थे। सरकार ने कांग्रेस को कुचलने का निश्चय किया। सरदार वल्लभभाई भी पुनः गिरफ्तार कर लिये गये। इस बार जेल जाने पर आपका स्वास्थ्य बहुत गिर गया। इसलिये मियाद से पहले ही आपको जेल-मुक्त करना पड़ा।

डाक्टरों ने पूर्ण विश्राम की सलाह दी। किन्तु देश में चुनाव का युद्ध शुरू हो गया था। डाक्टरों की सलाह न मान कर भी आपने कांग्रेस उम्मीदवारों की सफलता के लिये देश का भ्रमण किया। पञ्जाब, युक्त-प्रान्त, बिहार, आसाम आदि दूर-दूर प्रदेशों में भी आप गये।

कांग्रेस के उम्मीदवारों का निर्णय भी आपके हाथ में था। आप ही कांग्रेस पार्लिमेन्टरी बोर्ड के अध्यक्ष थे। इस पार्लिमेन्टरी बोर्ड का काम कांग्रेस के टिकट पर गए प्रतिनिधियों और चुने गए मन्त्रियों को रास्ता दिखलाना था। पार्लिमेन्टरी बोर्ड की आज्ञा से ही मन्त्रियों को शासन-नीति का निश्चय करना पड़ता था। यदि कोई मन्त्री कांग्रेस के सिद्धान्तों के प्रतिकूल आचरण करता था तो वह वल्लभभाई के कड़े अनुशासन से बच नहीं पाता था।

सरदार वल्लभभाई ने मन्त्रियों पर कड़ी निगरानी रखी थी। आठ प्रान्तों में कांग्रेस का मन्त्रिमण्डल शासन कर रहा था। और उन आठों प्रान्तों के शासक मन्त्रियों की लगाम अकेले सरदार के हाथ में थी। कांग्रेस की नीति के विरुद्ध चलने पर मन्त्रियों को अपने पद से त्याग-पत्र देने के लिये आप विवश कर देते थे। मध्यप्रान्त के मुख्य-मन्त्री डाक्टर खरे को इसी तरह अपना पद छोड़ना पड़ा था।

१६४२ की महाक्रान्ति

१६४२ में गांधी जी ने स्वाधीनता के अन्तिम युद्ध का ऐलान किया। सरदार वल्लभभाई भी कार्यसमिति के अन्य सदस्यों के साथ अहमदनगर जेल में बन्द कर दिये गए। ६ अगस्त से पूर्व आपने जो भाषण दिये थे उनमें कहा था कि स्वाधीनता का यह युद्ध एक सप्ताह से अधिक नहीं चलेगा। एक सप्ताह में ही अंग्रेज़ घुटने टेक देंगे।

१५ जून १६४५ के दिन आपको अन्य नेताओं के साथ ही जेल से मुक्त किया गया। उन दिनों अंग्रेज़ी सरकार ने भारत को आज़ादी देने का सङ्कल्प घोषित कर दिया था। मुस्लिम लीग रास्ते में रुकावटें डाल रही थी। आपने मुस्लिम लीग को इतनी खरी-खरी बातें सुनाईं कि लीगी मुस्लमान आपके दुश्मन बन गये। आपका कहना था कि "हम अंग्रेज़ों से भी आज़ादी के लिये लड़ेंगे और जो मुस्लमान रास्ते का रोड़ा बनेंगे तो उनसे भी लड़ेंगे।" मि० जिन्ना ने कहा था कि "मुस्लमानों की स्वीकृति के बिना आज़ादी दी गई तो हिन्दुस्तान में तलवारें चल

जायंगी, खून की नदियां बह जायंगी।" आपने उत्तर दिया—"तलवार का जवाब तलवार से दिया जायगा; खून की नदियां बहाने वाले को पूरी सज़ा दी जायगी।"

आपने जनता को समझाया कि आत्म-रक्षा के लिये हथियार उठाना हिंसा नहीं है। अहिंसा कमज़ोर का नहीं बहादुरों का हथियार है। कायर बनकर मरने की अपेक्षा हथियार चलाते हुए मरना अधिक अच्छा है।

कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बनने पर आपको प्रचार, रियासती विभाग और गृह-विभाग का मन्त्री बनाया गया। तीनों विभागों का सफलता से सञ्चालन करते हुए आपने जिस राजनीतिमत्ता का परिचय दिया उसकी प्रशंसा विदेशों के राजनीतिज्ञों ने भी मुक्तकंठ से की है। आप तीनों विभागों के मंत्री होने के साथ उपप्रधान मंत्री भी थे।

आप जिस काम का निश्चय कर लेते थे उसे पूरा करने में प्राणों की बाज़ी लगा देते थे। स्वाधीनता की घोषणा होने के बाद १५ अगस्त तक कई बार देश को आपकी दृढ़ता ने ही बचाया। ६ दिसम्बर से विधान-सभा का

अधिवेशन होने की घोषणा हो चुकी थी। लीग ने विधान सभा का बहिष्कार किया था। ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री भी विधान-सभा को स्थगित करवाने का यत्न कर रहा था। कुछ दिन पहले आपको लन्दन का बुलावा आया। आपने लन्दन जाने से इन्कार कर दिया। जवाहरलाल जी लन्दन गये। जनता को सन्देह था कि कहीं इन चालों से ब्रिटिश सरकार लीग से मिल कर विधान-सभा को अनिश्चित काल के लिए स्थगित न करवा दे। जनता के विश्वास को दृढ़ करने के लिए आपने बंबई में घोषणा की थी कि "आकाश चाहे गिर पड़े, पृथ्वी चाहे फट जाय, विधान-सभा का अधिवेशन ९ दिसम्बर से पीछे नहीं टल सकता।" अन्त में आपकी ही बात पूरी हुई। विधान-सभा ९ दिसम्बर को ही शुरू हुई। जवाहरलाल जी को लन्दन से दो-तीन दिन में ही वापस आना पड़ा।

स्वाधीनता मिलने के बाद यह डर था कि सारे देश में विप्लव हो जायगा। रियासतें अपनी स्वतन्त्र सरकारें क़ायम कर लेंगी। मुस्लिम-जनता विद्रोह कर देगी। देश में अराजकता फैल जायगी। यह डर

निराधार नहीं थे। स्वाधीनता देते हुए अंग्रेज़ इन विप्लवों का बीज बो गये थे। हिन्दुस्तान की ६०० से अधिक रियासतों को वे आज़ादी दे गये थे और हिन्दुस्तान की मुस्लिम जनता को खून बहाने के लिए उकसा गये थे। किन्तु सरदार की कूटनीतिज्ञता ने उनकी चालों को परास्त कर दिया।

—❀—

जूनागढ़ का प्रश्न

रियासती विभाग का मन्त्री बनते समय आपने ऐलान कर दिया कि "भारत सरकार रियासतों के साथ परस्पर सहयोग की नीति से चलेगी। रियासतों को स्मरण रखना चाहिये कि यदि वे जनता की आवाज़ को नहीं मानेंगी तो उन्हें अराजकता का सामना करना पड़ेगा। इसलिये उनका हित इसी में है कि वे भारत सरकार के साथ मित्रता निभाते हुए शासन करें। आपने यह भी ऐलान कर दिया कि जो रियासत जनता की राय को न मानकर किसी और देश से सन्धि करेगी उसे हम अपना शत्रु समझेंगे।

सरदार की कोशिशों से स्वाधीनता मिलने के बाद दो वर्षों में ही प्रायः सभी रियासतों ने जनता की राय मानते हुए भारत सरकार से सन्धि कर ली। केवल काश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद की सरकारों ने स्वतन्त्र रहने का निश्चय क़ायम रखा। काश्मीर पर पाकिस्तान की सेनाओं ने हमला कर दिया। इसलिये उसे भी भारतीय संघ के साथ होने की घोषणा करनी पड़ी।

जूनागढ़ में भी पाकिस्तान ने पैर फैलाने चाहे थे। पाकिस्तान की चालों को मात देने के लिये आपने जूनागढ़ के चारों ओर के इलाकों मानवदार, मंगरोल और बावरीवाड में ब्रिगेडियर गुरुदयालसिंह के सेनापतित्व में अपनी सेनायें भेज दीं। इस बीच श्यामलदास गांधी ने अपने स्वयंसेवकों के साथ जूनागढ़ में प्रवेश किया। जूनागढ़ का नवाब रियासत छोड़कर भाग गया। जूनागढ़ में जनता की हकूमत कायम हो गई। १२ नवम्बर १९४७ को जूनागढ़ पहुँचकर आपने हैदराबाद को भी चेतावनी दी थी कि "यदि हैदराबाद का नवाब भी उल्टी चालें

चलता रहा तो उसका भविष्य भी वही होगा जो जूनागढ़ के नवाब का हुआ है।"

—❀—

हैदराबाद की उलझन

हैदराबाद की उलझनें सुलझाने में पटेल को सबसे ज़्यादा देर लगी। हैदराबाद का झुकाव पाकिस्तान से सन्धि करने का था। क़ानूनी तौर पर हैदराबाद को ऐसा करने का हक़ था—किन्तु ८० फ़ी सदी जनता की राय को ठुकरा कर ही हैदराबाद ऐसा कर सकता था। सरदार पटेल ने हैदराबाद के नवाब को चेतावनी देदी थी कि वे पाकिस्तान का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेंगे। आख़िर हैदराबाद के नवाब को मज़बूर होना पड़ा कि वह हिन्द सरकार से सन्धि करे। इस सन्धि की चर्चा करते हुए सरदार पटेल ने २९ नवम्बर १९४७ को हिन्द पार्लिमैंट में एक बयान दिया था जिसमें आपने हिन्द और हैदराबाद के नये 'यथापूर्व समझौते' (Standstill Agreement) की व्याख्या की थी। हैदराबाद ने इस समझौते को कई बार तोड़ा और पाकिस्तान को करोड़ों रुपये का

कर्ज़ा दिया। तब सरदार पटेल की आज्ञा से भारत की सेनाओं ने जनरल चौधरी के सेनापतित्व में हैदराबाद में प्रवेश किया। उस समय रियासत के धर्मान्ध मुसलमान कासिम रज़वी के नेतृत्व में वहाँ की हिन्दू-प्रजा पर अत्याचार कर रहे थे। शासन के सब महकमों में अराजकता फैली हुई थी। एक सप्ताह की लड़ाई में ही हैदराबाद ने आत्म-समर्पण कर दिया। नवाब ने यह स्वीकार किया कि वे रजवी की कठपुतली थे।

रियासतों को हिन्द सरकार के नीचे लाने के साथ एक काम यह भी था कि छोटी-छोटी रियासतों को मिला कर बड़े संघ बनाए जायें। सब से पहले आपने काठियावाड़ की छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर 'सौराष्ट्र-संघ' की स्थापना की। अब तो सभी रियासतें बड़े-बड़े संघों में शामिल हो चुकी हैं। मध्यभारत, राजस्थान, हिमाचल, विन्ध्य-प्रदेश आदि संघ बन गये हैं। संघों के मन्त्री-मंडलों का निर्माण जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों में से होता है।

❀

मुसलमानों को चेतावनी

रियासतों के प्रश्न के बाद सब से जटिल प्रश्न साम्प्रदायिकता का था, जिससे स्वतंत्र भारत को खतरा था। साम्प्रदायिकता के प्रश्न को हल करने के लिये भी सरदार वल्लभभाई ने अनथक परिश्रम किया।

३० सितम्बर, १९४७ को, जब कि पंजाब की भूमि खून से लाल हो चुकी थी, आप स्वयं अमृतसर गये और वहाँ सिख नेताओं से मिलकर शान्ति स्थापना के लिए सलाह-मश्वरा किया। आपने सिक्खों से प्रार्थना की कि वे मुस्लिम शरणार्थियों को सुरक्षित रूप से पाकिस्तान जाने द। आपकी प्रार्थना का यह प्रभाव हुआ कि सैनिक सहायता के बिना ही सब मुस्लिम शरणार्थी अमृतसर से गुजर कर लाहौर पहुँच सके। २२ अक्तूबर १९४७ को आप से पटियाला के दरबार-हॉल में पंथिक-कान्फ्रेन्स में भाग लिया, और उसी दिन शाम को १॥ लाख की उपस्थिति में भाषण दिया।

उन दिनों सरदार ने देखा कि हिन्दुस्तान के मुसलमान

अब भी छुपे-छुपे पाकिस्तान की हिमायत कर रहे हैं। सरदार को हिन्द के मुसलमानों की इस नीति के प्रति बड़ा असन्तोष था। इस असन्तोष का प्रकाश आपने ६ जनवरी, १९४८ को लखनऊ के भाषण में किया। इस भाषण की खूब चर्चा हुई। आपने कहा था :

"मैं मुसलमानों का सच्चा मित्र हूँ, यद्यपि मुझे उनका दुश्मन कहा जाता है। मैं लाग-लपेट की बातें नहीं करता। बगुला-भगत बनना मुझे नहीं आता। मुसलमानों को मैं कह देना चाहता हूँ कि केवल शाब्दिक समर्थन से वे अपने पुराने पापों को नहीं धो सकते। उन्हें चाहिए कि वे पाकिस्तान के हमलों का विरोध करें और देश-भक्ति का परिचय दें। वे दो नावों पर एक साथ सवार नहीं हो सकते। आपको एक नाव चुन लेनी होगी। जो हिन्द के प्रति दिल से वफ़ादार नहीं हैं उन्हें चाहिए कि वे पाकिस्तान चले जायें।"

मुसलमानों को चेतावनी देकर ही सरदार वल्लभभाई चुप नहीं रहे। राष्ट्रीय-स्वयं-सेवक-संघ को भी आप ने इन शब्दों में सावधान किया था—"मैं राष्ट्रीय-स्वयं-सेवक

संघ से अपील करता हूँ कि संघ साम्प्रदायिक कट्टरता को छोड़ कर बुद्धिमानी और चतुराई से काम ले। संघ को चाहिए कि वह कभी आक्रमण में पहल न करे।" हिन्दू सभा के हिमायतियों से आपने अपील की थी कि वे कांग्रेस के साथ सम्मिलित हो जाँय। आपने उन्हें सम्बोधन करते हुए कहा कि—"यदि आप अपने को हिन्दू-धर्म की रक्षा के ठेकेदार समझते हैं तो यह आपकी भूल है। हिन्दू-धर्म बड़ा उदार है। उसमें बड़ी सहिष्णुता है। वह इतना सङ्कीर्ण नहीं जितना आप समझते हैं।"

कांग्रेस के उन नेताओं को भी आपने चेतावनी दी जो कांग्रेस के नाम पर अन्य सभी दल के लोगों को चुप करना चाहते थे। इन कांग्रेस-जनों का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वयं-सेवक-संघ को मिटा देना था। आपने कहा—

"आप लोग शासन का अधिकार पाकर इतने मदान्ध न हो जाँय कि सब को डण्डे के ज़ोर से कुचलने की ठान लें। डण्डे के प्रहार से किसी भी संगठन को मिटाया नहीं जा सकता। डण्डा तो चोर-डाकुओं के लिए

इस्तेमाल किया जाता है। संघ के लोग चोर-डाकू तो हैं नहीं, वे भी देशभक्त हैं, वे भी अपने देश से प्रेम करते हैं। कांग्रेस को चाहिये कि वह उन पर प्रेम से विजय पाने की कोशिश करे, डण्डे के ज़ोर से नहीं।"

—*—

रामराज्य की स्थापना

गांधी जी ने दिल्ली और पंजाब में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों को प्रेमपूर्ण बनाने के लिए दिल्ली में उपवास शुरू कर दिया था। जिस दिन उपवास शुरू हुआ उसी दिन सरदार वल्लभभाई को राजकोट जाना पड़ा। राजकोट में १५ जनवरी, १९४८ के दिन आपने गांधी जी के उपवास का ज़िक्र करते हुए कहा :—

"मैं बहुत दुखी हूँ। महात्मा जी को उपवास की हालत में छोड़कर मुझे यहां आना पड़ा। आजकल कुछ हिन्दुओं ने महात्मा जी को गालियां देना अपना पेशा बना लिया है। मैं ऐसे लोगों को हिन्दू नहीं मानता। महात्मा जी के तपोबल ने ही हमें स्वाधीन बनाया है।

उस स्वाधीनता को रामराज्य में बदलना आपका काम है। रामराज्य की पहली शर्त हिन्दू-मुस्लिम एकता है और दूसरी है हरिजन-उद्धार। स्वावलम्बी होना रामराज्य की तीसरी शर्त है। हमें गांवों में ग्राम-पञ्चायतें खोलनी चाहियें। हमारी संस्कृति हमें जीवन के ऊँचे आदर्श सिखाती है। उन आदर्शों के प्रति यदि हम सच्चे रहें तो रामराज्य स्वयं स्थापित हो जायगा।"

—*—

मैं सचाई को नहीं छोड़ूंगा

सरदार वल्लभभाई को लौह-पुरुष या वज्र-पुरुष कहा जाता था। शासन-पद संभालने के बाद उनका यह गुण और भी अधिक स्पष्ट हो गया था। झूठ के सामने झुकना या बनावट की मीठी बातें करना उन्हें नहीं आता था। इसीलिए आपके विपक्षी आप से डरते थे और आपको बदनाम करने की कोशिश भी करते थे।

आपके लखनऊ वाले भाषण से कुछ मुसलमान नेता बहुत झुंझला गये। उन्होंने गांधी जी से भी

शिकायत की। इस की चर्चा सरदार वल्लभभाई ने अपने १५ जनवरी वाले बम्बई के भाषण में की। बम्बई के म्युनिसिपल कार्पोरेशन द्वारा आपको एक मान-पत्र भेंट किया गया था। लाखों की भीड़ में भाषण देते हुये आपने कहा था:—

"मैं बहुत स्पष्टवादी हूँ और बहुत कड़वी बात कह देता हूँ—हिन्दुओं को भी, मुसलमानों को भी। फिर भी मैं दोनों का मित्र हूँ। जो मुसलमान मुझे अपना मित्र नहीं मानते वे दीवाने हैं। उन्हें सच-झूठ की तमीज़ नहीं है। लेकिन उन्हें खुश करने के लिए ही तो मैं सचाई को नहीं छोड़ सकता। अपने कर्त्तव्य से मुख नही मोड़ सकता। कुछ मुसलमान मेरे लखनऊ वाले भाषण को लेकर गांधी जी से शिकायत करने गये थे। मैंने अपने भाषण में मुसलमानों को कहा था कि काश्मीर व हैदराबाद के प्रति पाकिस्तान ने जो नीति रखी है उसका उन्हें प्रतिवाद करना चाहिये। यदि वे ऐसा नहीं करते तो अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते गांधी जी ने उनकी शिकायतें सुनकर सार्वजनिक रूप से

मेरे कथन का स्पष्टीकरण किया है, और मेरी हिमायत की है। मुझे इससे बड़ा दुख हुआ, क्योंकि मैं इतना कमज़ोर नहीं हूँ कि दूसरों को मेरी हिमायत करनी पड़े।"

अपनी स्पष्टवादिता के कारण आप के प्रति कई भ्रमपूर्ण बातें फैल जाती थीं किन्तु सचाई प्रकट होने पर आपका उज्ज्वल चरित्र और भी तेजस्वी रूप से प्रकट होता था।

—*—

५५ करोड़ का प्रश्न

उन दिनों पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये देने का प्रश्न बड़ा जटिल हो गया था। पाकिस्तान ने यह रक़म हिन्दुस्तान से वसूल करनी थी, किन्तु हिन्दुस्तान का भी पाकिस्तान से बहुत पावना शेष था। पाकिस्तान सरकार अपनी जिम्मेदारियां तो निभाती नहीं थी किन्तु हिन्दुस्तान से पाई-पाई वसूल करने पर तुली हुई थी। सरदार वल्लभभाई ने आग्रह किया कि "हम पाकिस्तान को यह रक़म तभी

देंगे यदि वह भी अपना फ़र्ज़ पूरा करे। सरदार वल्लभभाई के वक्तव्य से पाकिस्तान की सरकार भड़क उठी। हिन्दुस्तान के कुछ मुस्लिम नेता भी गांधी जी के पास फ़रियाद लेकर गये। गांधी जी ने भी सरदार वल्लभभाई पर दबाव डाला। आख़िर आपने बिना शर्त पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये देना स्वीकार कर लिया। इसे स्वीकार करते हुए आपने बम्बई के भाषण में कहा था—"हम पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। पैसे की ख़ातिर मन-मुटाव क्यों बढ़ायें। गांधी जी की आत्मा को यदि इस रक़म की अदायगी से सन्तोष होता है तो हम निःसंकोच यह खुद दे देंगे। गांधी जी उस ऊँचे दर्जे पर पहुँच गये हैं जहाँ मनुष्य क्रोध के वश में नहीं होता। उनमें प्रेम है। प्रेम भरा है। यदि हम उनके आदर्शों पर चल सकते तो हमें पुलिस और फ़ौज की भी ज़रूरत नहीं थी।"

—*—

२० जनवरी, १९४८ को आपने बम्बई के मज़दूरों के सामने परेल के कामगार मैदान में भाषण दिया था। उस में भी आपने मज़दूरों को कहा था कि—

"आज हम चौराहे पर खड़े हैं। हमारी भूलें हमें हमेशा के लिये बरबादी के गड्ढे में गिरा देंगी। हमें बहुत सोच-समझकर आगे बढ़ना है। बरबाद होंगे तो हम दोनों होंगे—मज़दूर भी, पूंजीपति भी। दोनों के भविष्य एक दूसरे से मिले हुए हैं।

"समाजवादियों ने जब एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का संगठन किया था तो देश का कल्याण नहीं हुआ था। जहाज़ी बन्दरगाह के मज़दूरों की हड़ताल से देश में अनाज आना रुक जाता है। ग़रीब लोग कष्ट पाते हैं। कष्टों का ज़्यादा बोझ ग़रीबों पर ही पड़ता है। समाजवादी इन बातों को नहीं सोचते। वे शासन अधिकार चाहते हैं तो ले लें। कांग्रेस का ध्येय स्वाधीनता की प्राप्ति था, वह तो पूरा हो गया। अब कोई भी शासन का अधिकार ले सकता है। किन्तु मज़दूरों को इन दल-बन्दियों की दलदल में नहीं फँसना चाहिये।"

—*—

मैं ग़रीबों का दोस्त हूँ

इसके बाद २२ जनवरी, १९४८ के दिन अहमदाबाद में महाजन एसोसियेशन के सामने भाषण देते हुए भी आपने इन्हीं बातों को दोहराया। वहां आपने कहा था—

"मुझ में यदि कुछ गुण है तो गांधी जी की ही संगति से है। मैंने जो कुछ पाया है उन्हीं की देन है। सबसे पहले महात्मा जी ने ही अहमदाबाद में वस्त्र-व्यवसायी मज़दूरों का एसोसियेशन बनाया था। आज मज़दूरों में जो संगठन नज़र आता है उसकी नींव महात्मा जी ने ही रखी थी।"

सरदार वल्लभभाई की कुशल और दृढ़ शासन-नीति का ही यह प्रभाव है कि हिन्दुस्तान अभी तक लाल झण्डे की छाया में नहीं गया। हिन्दुस्तान भी चीन बन जाता, यदि सरदार पटेल न होते।

आपने कई बार देश को अराजकता के गड्ढे में गिरने से बचाया। कलकत्ता के सभी सरकारी नौकरों ने एक बार हड़ताल करने का निश्चय किया।

हड़ताल की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। आप उससे एक दिन पहले ३ जनवरी, १९४८ के दिन कलकत्ता पहुँचे। ६ लाख से अधिक लोगों की भीड़ आपका भाषण सुनने पहुँची। आपने कहा—

"जो लोग मौजूदा मन्त्रियों के काम से सन्तुष्ट नहीं हैं उन्हें चाहिये कि वे वैधानिक रीति से उन मंत्रियों को हटा दें। गुन्डागीरी से शहरी जीवन बरबाद होता है। मंत्रियों को आपने ही बनाया है, आप जब चाहें उन्हें हटा सकते हैं, किन्तु हड़ताल से नहीं, वैधानिक उपायों से।"

"कुछ लोग कहते हैं मैं नरेशों, ज़मीदारों और पूंजीपतियों का दोस्त हूँ। किन्तु मेरा तो दावा है कि मैं सभी का दोस्त हूँ। गांधी जी से मैंने एक बात सीखी थी, वह यह कि अपनी मल्कीयत नहीं बनाना। मेरे पास आज कोई मल्कीयत नहीं है। मैं ग़रीबों का भी दोस्त हूँ, अमीरों का भी। जो लोग अमीरों को गालियां देकर ही देश के नेता बनना चाहते हैं वे भूल करते हैं। ऐसा करना आजकल फैशन हो गया है।"

"ये लोग देश में मज़दूर-राज स्थापित करना चाहते हैं। इंगलैण्ड में भी मज़दूरों का राज है। किन्तु वहाँ मज़दूरों ने हड़तालें करके यह राज नहीं लिया है। मज़दूर-राज हम गांधी जी के आदर्शों पर चलकर ही ले सकते हैं।"

—❀—

पाकिस्तान को चुनौती

पाकिस्तान के शासक यदि किसी के व्यक्तित्व को मानते थे तो पटेल को ही मानते थे। हैदराबाद की समस्या हल होने से पहले पाकिस्तान की सरकार हैदराबाद से मिलकर हिन्दुस्तान को नुक़सान पहुँचाने की साज़िशें कर रही थी। सरदार पटेल ने ३ जनवरी, १९४८ के दिन कलकत्ता में भाषण देते हुए उन्हें इन शब्दों में चेतावनी दी थी :—

"हम पाकिस्तान से इतना ही चाहते हैं कि वह हमारे मामलों में दख़ल न दे। तुम्हें पाकिस्तान मिल गया। जैसा मन में आये उसका इस्तेमाल करो। उसे बहिश्त बनाओ या दोज़ख़—यह तुम्हारा अधिकार है, उसे जैसा चाहो बना लो।

"पाकिस्तान वाले कहते हैं कि उसके दुश्मन उसे तबाह करना चाहते हैं। मैं कहता हूँ, यह तबाही आएगी तो बाहर से नहीं, भीतर से ही आएगी। हमने पाकिस्तान को बड़ी उदारता से मुँहमाँगी चीज़ें दे दीं। लेकिन हम यह बर्दास्त नहीं करेंगे कि वे उससे गोलाबारूद बनाकर हम पर हमला करें।

"मैं पाकिस्तान को विश्वास दिलाता हूँ कि हम पाकिस्तान का अकल्याण नहीं चाहते। किन्तु उन्हें भी चाहिए कि वे हमें शान्तिपूर्वक रहने दें।

"काश्मीर का प्रश्न हमने राष्ट्रसंघ के सुपुर्द कर दिया है। जनता का बहुमत ही काश्मीर के भविष्य का फ़ैसला करेगा। किन्तु जब तक खून खराबी चल रही है जनता की राय कैसे ली जा सकती है? यदि हमें तलवार के ज़ोर पर ही काश्मीर की रक्षा करनी पड़े तो जनता की राय लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं पाकिस्तान को खबरदार कर देना चाहता हूँ कि हम जनता की राय जाने बिना काश्मीर की भूमि का एक इञ्च हिस्सा भी पाकिस्तान के सुपुर्द नहीं करेंगे।"

—❀—

गाँधी जी का बलिदान

गांधी जी के बलिदान से सरदार पटेल की कमर टूट गई। दोनों में अगाध प्रेम था। सरदार पटेल गांधी जी को बड़ा भाई और गुरु दोनों मानते थे। बलिदान के पूर्व गांधी जी सरदार पटेल से ही बातें कर के प्रार्थना सभा में आ रहे थे। दोनों की पहली भेंट अहमदाबाद में सन् १९१६ में हुई। ३२ वर्ष तक दोनों क़दम से क़दम मिलाते हुए एक ही रास्ते के यात्री रहे थे। कई बार जेल में भी दोनों साथ रहे थे। सरदार पटेल गांधी जी की सेवा से कभी नहीं चूकते थे। स्वयं गांधी जी ने सरदार की सेवा के प्रति इन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट की थी :—

"जेल में वल्लभभाई ने मेरे प्रति जो स्नेह दिखाया उससे मुझे अपनी माता द्वारा प्रकाशित स्नेह की याद आ रही है। मैं नहीं जानता था कि उनके पास एक माँ का हृदय भी है।"

साधारणतया लोगों को सरदार वल्लभभाई पटेल के निर्मोही और कठोर रूप का ही पता था। शासन के

या कर्त्तव्य-पालन के समय आप सचमुच बहुत कठोर हो जाते थे। उस समय आप हृदय की सारी कोमलताओं को ताक़ पर रख देते थे, और बिल्कुल निर्मम बन जाते थे।

आपकी निर्ममता का इस से बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता था कि जब अदालत में वकील की हैसियत से बहस करते हुए आपको अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिला तब भी आपने अपना कर्त्तव्य नहीं छोड़ा। बहस जारी रखी। मृत्यु के तार को पढ़ लिया और मोड़ कर जेब में रख लिया। बहस समाप्त होने के बाद ही आपने अदालत से विदा ली।

किन्तु यह कठोरता केवल शासन और कर्त्तव्य-पालन में ही थी। अन्यथा आप भी बड़ा स्नेही हृदय और विनोदी स्वभाव रखते थे।

आपका विनोद बड़ा स्पष्ट और चुभने वाला होता था। १९३१ में जब आपके बड़े भाई बीमार थे तब किसी ने इनसे पूछा "आपके भाई को कौनसी बीमारी है?" आपने मसख़रेपन से जवाब दिया—"उन्हें असेम्बली का प्रधान न बनने की बीमारी है।"

आपके भाषणों में भी इस विनोद का आभास मिलता था। अपने भाषण में आप छोटे २ लतीफ़े भी सुनाते जाते थे। भाषण का विषय कितना ही गम्भीर हो, आप उसे सीधी-सादी भाषा और व्यंग-विनोद भरे चुटकुलों से बड़ा दिलचस्प बना देते थे।

हैदराबाद का प्रश्न हल करने में आपको आशातीत सफलता मिली थी। डर था कि हैदराबाद की चिनगारियां देश भर में फैल कर कहीं आग न लगा दें। किन्तु सरदार वल्लभभाई की दृढ़ शासन-नीति ने देश को बचा लिया। हैदराबाद के निवासियों को क़ासिम रज़वी के अत्याचारों से बचाने के लिये आपने फ़ौज को रियासत में प्रवेश करने की आज्ञा दे दी। ५ दिन में ही हिन्द-सेना सिकन्दराबाद पहुँच गई। हिन्द सेना ने निज़ाम को भी रज़वी के चंगुल से बचा लिया। क़ासिम रज़वी के साथ उसके दल के हज़ारों लोग गिरफ्तार कर लिये गए। निज़ाम की सेना ने हथियार डाल दिये। निज़ाम ने सन्धि करनी चाही, किन्तु सरदार पटेल ने बिना शर्त समर्पण करने की माँग की। निज़ाम को मानना पड़ा।

हैदराबाद के समर्पण के साथ काश्मीर के अतिरिक्त देश की सब रियासतें हिन्द में सम्मिलित हो चुकी थीं। सरदार पटेल के इस चमत्कारी कार्य को भारत के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखा जायगा। सदियों तक आपका यशस्वी नाम अमर रहेगा। जो काम सम्राट् अशोक और चन्द्रगुप्त नहीं कर सके वह काम आपकी राजनीतिमत्ता ने कर दिखाया।

रियासतों के संघीकरण के बाद भी आपकी परेशानियां दूर नहीं हुईं। आपका आदर्श भारत को अखण्डित रखना था। दुश्मन इस महादेश को खण्ड-खण्ड करना चाहते थे। रियासतों की समस्या के बाद प्रांतों के विभाजन का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। भाषा-भेद के आधार पर प्रांतों के बँटवारे की मांगें होने लगीं। सरदार पटेल ने एक बार फिर अपनी आवाज़ जनता तक पहुँचाई और लोगों को किसी भी आधार पर देश का विभाजन न करने की सलाह दी। इस सम्बन्ध में आपका नागपुर का भाषण बड़े महत्त्व का था। आपके ही प्रभाव से कांग्रेस हाई कमान ने भाषा के आधार पर प्रान्तों के

स्थगित करने का निश्चय कर दिया।

आपका दृढ़ विश्वास था कि देश को खण्डित करने का कोई भी काम देश को तबाह कर देगा। आप सम्पूर्ण भारत को एक महान् राष्ट्र बनाना चाहते थे, जो एशिया का ही नेतृत्व नहीं करेगा वरन् संसार में शान्ति स्थापित करने में भी सहायक होगा।

स्वाधीनता मिलने के बाद आपको हवाई जहाज़ से दूर-दूर तक यात्रा करनी पड़ती थी। उस उम्र में हवाई जहाज़ की लम्बी यात्राओं का कष्ट उठाना आपकी आश्चर्यजनक सहन-शक्ति को प्रकट करता है।

इन हवाई यात्राओं में एक यात्रा बड़े खतरे की हुई। राजस्थान-संघ का उद्घाटन करने के लिए आप दिल्ली से जयपुर जा रहे थे। रास्ते में जहाज़ का इञ्जन बिगड़ गया। संचालक ने जहाज़ को एक नदी के किनारे रेतीले मैदान में उतार लिया। ४ घंटे तक देश भर में चिन्ता फैली रही। देश के सौभाग्य से आपको कोई चोट नहीं पहुँची। आपकी कुशलता के समाचार ने देश भर में फिर प्रसन्नता की लहर दौड़ा दी। पार्लिमैन्ट में

सदस्यों ने आपकी सुरक्षा के लिये प्रार्थना की और ईश्वर को धन्यवाद दिया। राजस्थान-संघ का उद्घाटन करने के बाद आप जब नई दिल्ली आये और पार्लिमैन्ट में गये तो सदस्यों ने इतने उत्साह के साथ आपका स्वागत किया कि असेम्बली के इतिहास में आज तक किसी व्यक्ति का वैसा स्वागत नहीं किया गया। पार्लिमैन्ट की ओर से आपको एक चाँदी का हवाई जहाज़ भी भेंट किया गया।

सरदार पटेल १५ दिसम्बर १९५० ई० को इस संसार से दिव्य लोक में सिधार गये। उनके देह-त्याग की ख़बर जंगल की आग की भाँति देश और विदेश में फैल गई। सारा भारत शोक के समुद्र में डूब गया। सरकारी भवनों पर लहराते हुए राष्ट्रीय झण्डे झुक गये। देश भरके सरकारी और ग़ैर-सरकारी दफ्तर, स्कूल, कालेज, दुकानें और कारख़ाने बन्द हो गये। देश की पार्लियामेंट (संसद) का चलता हुआ अधिवेशन रुक गया।

सरदार पटेल ने अपने युग की बड़ी २ घटनाओं में महत्त्वपूर्ण भाग लिया। भारत के इतिहास में उनका नाम सदा जीवित रहेगा।

CONSULATE GENERAL OF INDIA
SAN FRANCISCO, CAL.